धोकेबाज़

डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8th Road North
Ahmadi - 61008
Kuwait

पुल की चढ़ाई शुरू हो गई थी वो रिक्शा से उतर गया। अरे बाबूजी बैठे रहिये आप तो अकेले हैं और दुबले भी यहाँ तो तीन तीन सवारियां बैठी रहती हैं और चढ़ाई पर भी नहीं उतरतीं। चढ़ाई ख़त्म हो गई थी और वह दोबारा रिक्शे पर बैठ गया। थोड़ी देर में ढ़लान शुरू हो गई थी और रिक्शा वाले ने पैडल चलाना बन्द कर दिया था और रिक्शे खुद बखुद भाग रहा था। वह सोचने लगा है आदमी की ज़िन्दगी में उतार चढ़ओ रहता है लेकिन उन रिक्शे वालों की ज़िन्दगी में कितनी यकसानियत है। तक़रीबन एक जैसी ज़िन्दगी कितने पैसे रिक्शा मालिक को देने हैं उन्हें पता है। रोज़ ही सवारियों से पैसे के लिये झिक झिक रिक्शे वाले इन सब चीज़ों के आदी होते हैं। बस उन की ज़िन्दगी की राहत इतनी होती है कि जब चढ़ाई के बाद ढ़लान आ जाये तो उन्हें थोड़ी देर के लिये राहत का एहसास होता होगा।

क्या नाम है तुम्हारा उसने रिक्शे वाले से पूछा। जी माधव, रिक्शे वाले ने मुख़्तसर सा जवाब दिया था। कितना कमा लेते हो रोज़। वह अमेरीका से आया था। जहाँ लोग परसनल सवाल पूछना पसंद नहीं करते। लेकिन यहाँ के मुल्कों में ऐसी कोई बात नहीं। तनख़्वाह तो सब से पहले पूछी जाती है। ख़ास तौर पर अगर कोई अपना रिश्ता लेकर पहुंचता है। कितना कमाता है तो सब से पहले यही सवाल दाग दिया जाता है। ये हमारे एक दोस्त का तजुर्बा है जब वह हरयाना के किसी शहर में अपनी एक क्लास फेलो का हाथ मांगने उसके घर गये थे। पहले ही सवाल पर चित हो गये। ज़ाहिर है एम0 ए0 फाइनल का Student क्या कमाता होगा। तनख़्वाह के सवाल पर बगल झांकने लगे। ये अमेरीका तो है नहीं जहाँ Student पढ़ाई के साथ साथ कुछ न कुछ काम भी करते हैं। चाहे वह वेटर या टैक्सी ड्राइवर ही की जाब क्यो न हो। और यहाँ का Student, Parents पर अच्छा ख़ासा मुनहसिर और यहाँ तक की उसकी शादी ब्याह के भी एक बड़े खर्चे की जिम्मेदारी भी Parents पर ही और वह इस ज़िम्मेदारी को बहुत हंसी खुशी और जोश व खरोश से निभाते हैं। बहू को घर लायेंगे पोता पोती को खिलायेंगे वगैरा वगैरा वह अपने बारे में सोचने लगा उस की भी तो ऐसी ही ज़िन्दगी थी। माँ बाप ने उस की शादी की। शादी के बाद वह अपनी बीवी को लेकर अमेरीका सुधार गया। पोता पोती सब अमेरीका में पैदा हुये अपने माँ बाप को वो उनके फोटो भेजता रहा। वह ये भी भूल गया कि उस ने रिक्शे वाले से कोई सवाल किया। और उस वक़्त चौका जब रिक्शे वाला उस से कह रहा था बाबूजी मेडिकल कालेज आ गया। उस के जेब में सौ सौ के नोट थे वह रिक्शे वाले को दे सकता था। लेकिन उसके ज़हन में कुछ और था। उस का बड़ा सा घर जहाँ उस के माँ बाप अकेले रहते हैं रिक्शे वाला अपनी फैमिली के साथ सरवेन्ट्स क्वाटर में रह सकता था। वह उस को अच्छी तनख़्वाह देगा। उस के माँ बाप की तनहाई भी कुछ कम हो जायेगी। उसने रिक्शे वाले से कहा वह उस का इन्तिज़ार करे उसे थोड़ी देर लग जायेगी फिर उसे रिक्श पर कहीं और भी जाना है।

ओ के बाबूजी। रिक्शे वाले ने जवाब दिया था। और वह रिक्शे वाले के इस जवाब से बहुत महजूज़ हुआ था। हो सकता है बात चीत में वह ओ के वगैरा का इस्तेमाल कर रहा हो और रिक्शे वाले ने उसका मफ़हूम समझ लिया हो।

वह कार्डयालोजी डिपार्टमेन्ट के हेड डा0 ख़ान से मिलने उन के डिपार्टमेन्ट चला गया। वह दोनों इस जोश ख़रोश से मिले कि आस पास बैठे दिल के मरीज़ दहशत ज़दा हो गये। डा0 ख़ान उस का एम बी बी एस का क्लासफेलू था दोनों पक्के दोस्त थे ज़हीन और शरारती भी। डा0 ख़ान एम बी बी एस, एम डी, एम आर सी पी सब करके मेडिकल कालेज में प्रोफेसर और हेड आफ डिपार्टमेन्ट था और वह अमेरीका चला गया था एक बेहतरीन सरजन डा0 ख़ान ने आखिरी मरीज़ को देखा और उसे लेकर अपने चैम्बर में आ गये। दोनों घण्टो बात करते रहे अपनी स्टूडेन्ट लाइफ की और मुख़तलिफ़ क़िस्म की शरारतों की जिन की वजह से वह दोनों पूरे मेडिकल कालेज में जाने जाते थे। अमां मेरे बाल कितने सफेद हो गये और तुम्हारे सब के सब काले डाक्टर ख़ान ने उससे कहा था। सर के बाल पर कालिक पोती हुई है वरना मरीज़ आप्रेशन नहीं करायेंगे। सोचेंगे कि सर के बाल सफेद हो रहे हैं तो हाथ भी कांपता होगा। वह डा0 ख़ान से मिल कर वापस आने लगा। डा0 ख़ान ने कहाँ कि वह थोड़ी देर और रूके तो वह उसे छोड़ देगा। लेकिन वोह बोला नहीं फिक्र की बात नहीं मैं रिक्शे पर घूम रहा हूँ बहुत मज़ा आ रहा है पुरानी यादें ताज़ा हो रही हैं। याद है जब हम तुम और रवि एक साथ रिक्शे पर बैठते थे तो तुम रिक्शे पर बिलकुल किनारे पर बैठते थे और पैसा भी नहीं देते थे कि मैं तकलीफ़ में बैठा था वह डा0 ख़ान से कह रहा था और डा0 ख़ान ने एक फलक शिगाफ़ क़हक़हा लगाया। उसे ये बात याद आ गई थी।

वह डा0 ख़ान से मिल कर मेडिकल कालेज के गेट के बाहर आ गया। उसने सोचा रिक्शे वाले के लिये वह कुछ करेगा। अगर वो उस के घर पर रहने के लिये नहीं तैयार हो तब भी कम अज़ कम उस को इतना रूपया दे देगा कि वह खुदा अपना रिक्शा ख़रीद ले।

रिक्शे वाला नज़र नहीं आ रहा है उस ने इधर उधर देखा, अब वह हर तरफ नज़रें दौड़ा रहा था उस रिक्शे वाले का कहीं पता नहीं था, आस पास के लोगों से रिक्शा वाले के बारे में दरयाफ़्त किया। किसी को कुछ नहीं मालूम था। थक हार कर वह घर वापस आ गया। उस का दिमाग बोझल हो गया उसके समझ में नहीं आ रहा था कि रिक्शा वाला वहाँ से क्यो चला गया और उस उधेड़ बुन में कई घण्टे गुज़र गये उस का किसी काम में दिल नहीं लग रहा था। अखबार उठाकर पढ़ना चाहा फिर रख दिया खाना खाने से भी मना कर दिया। यका यक उसके दिमाग में एक झन्नाका सा हुआ। मेडिकल कालेज के तो दो गेट हैं वह शायद दूसरे गेट से बाहर निकल आया है। उसने अपने एक रिश्तेदार को बुलाया था और उसकी मोटर साइकिल पर आंधी तूफान की रफ़्तार से मेडिकल कालेज के दूसरे गेट पर पहुंचा था पता चला थोड़ी देर पहले एक रिक्शे वाला बड़बड़ाता हुआ वहा से चला गया था। किसी सवारी ने उसे धोका दिया था।

★★★